Notification No: F.NO.COE/ Ph.D./(Notification)/591/2025

Date of Award: 30/12/2025

Name: Nitish Kumar

Name of Supervisor: Prof. Naved Jamal

Name of Department: Political Science

Topic of Research: 2005 KE PASHCHAT BIHAR KE VIKAS MEIN PRAMUKH GAIR SARKARI SANGATHANON KI UBHARTI BHOOMIKA: GOPALGANJ EVAM PATNA JILON KA ADHYAYAN

शोध प्राप्तियाँ (Research Findings)

मुख्य शब्द : बिहार, विकास, गैर-सरकारी संगठन, सुशासन, सहभागिता।

बिहार के विकास में गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) की भूमिका के अध्ययन (गोपालगंज एवं पटना जिलों के संदर्भ में) से निम्न मुख्य निष्कर्ष प्राप्त हुए:

- बिहार में सरकार की नीतियों एवं योजनाओं तथा इसके प्रभाव स्वरूप सामाजिक स्तर पर आए बदलावों ने शिक्षा, रोजगार व अपने अधिकारों के लेकर महिलाओं की जागरूकता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।
- पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं के शिक्षा के स्तर में काफी सुधार हुआ है तथा उच्च शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ी है।
- बिहार में सरकार की नीतियों एवं योजनाओं के सकारात्मक प्रभाव से मध्यम वर्ग (₹1 लाख से ₹5 लाख वार्षिक आय) वाले परिवारों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।
- वर्ष 2005 के बाद सरकार की नीतियों एवं योजनाओं का जनता के ऊपर व्यापक प्रभाव देखने को मिला है, जिसका ग्रामीण आबादी को सबसे अधिक लाभ हुआ है।
- शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ, रोजगार, महिला सशक्तिकरण, आपदा प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक न्याय के क्षेत्र में सरकार के प्रयासों से लोग संतुष्ट हैं, किंतु अत्यधिक संतुष्ट लोगों की संख्या कम है, इन क्षेत्रों में और सुधार की आवश्यकता है।
- बिहार की एक बहुत बड़ी आबादी गैर-सरकारी संगठनों की कार्यप्रणाली से भली-भांति परिचित है।
- शहरी आबादी की तुलना में ग्रामीण जनता जीविका परियोजना की कार्यप्रणाली से अधिक परिचित है एवं स्वयं सहायता के क्षेत्र में व्यापक लाभ प्राप्त कर रही है ।
- बिहार में गैर-सरकारी संगठनों की कार्यप्रणाली, उनके कार्यों को देखकर तथा विभिन्न संचार माध्यमों के माध्यम से जनता परिचित हुई है।

- वर्ष 2005 से पहले भी बिहार में गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका थी, लेकिन इसके बाद उनके प्रभाव में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।
- राज्य एवं केंद्र सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन तथा विकास योजनाओं के प्रति जनता को जागरूक करने में गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आई है।
- बिहार के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की लगभग 75% आबादी कम से कम 1 से 5 की संख्या में गैर-सरकारी संगठनों से परिचित है।
- बिहार में जो गैर-सरकारी संगठनों की सबसे ज्यादा प्रभावी है उनमें अधिकांश सरकार की योजनाओं से जुड़कर कार्य कर रहे हैं या उनकी निर्भरता राज्य या केंद्र सरकार, राष्ट्रीय या विदेशी दानदाता संस्थाओं के उपर है।
- वर्ष 2005 के बाद बिहार में गैर-सरकारी संगठन सामाजिक स्तर पर यह विश्वास हासिल करने में सफल हुए है कि सामाजिक स्थिति एवं सामाजिक सुरक्षा में बदलाव लाने में इनकी महत्वपूर्ण हैं।
- बिहार में जनता की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने में गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका सकारात्मक रूप में उभर कर आई है।
- बिहार में यह सामान्य प्रवृति देखने को मिलता है कि राज्य के प्रशासनिक तंत्र एवं गैर-सरकारी संगठनों के बीच कभी सामंजस्य तो कभी टकराव की स्थिति उत्पन्न होती रहती है।
- पूरे बिहार में यह विशेषता देखने को मिला है कि जनता के द्वारा गैर-सरकारी संगठनों को आर्थिक सहयोग देने की प्रवृत्ति काफी कम पाई गई है।
- एक चुनौती के रूप में यह विशेषता देखने को मिला है कि वित्तीय अभाव के कारण बिहार में बड़ी संख्या में गैर-सरकारी संगठन निष्क्रिय अवस्था में हैं।
- सरकार द्वारा प्रायोजित योजना जीविका परियोजना स्वयं सेवी संस्था के रूप में काफी प्रभावशाली है जिसका जनता से प्रत्यक्ष संपर्क करने वाली संस्थाओं में “जीविका दीदी” का स्थान सबसे ऊपर है।
- शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, महिला सशक्तिकरण, आपदा प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक न्याय के क्षेत्रों में गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका सामान्य रूप से विद्यमान है।

****